MAH/MUL/ 03051/2012
ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता

Jan. To March 2024
Issue 49, Vol-11

Date of Publication
01 Mar. 2024

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले
-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Bapu Ganpat.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
www.vidyawarta.com

27) माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन
डॉ. अंजनी कुमार मिश्र, प्रीती सिंह, जौनपुर (उ.प्र.) ||117

28) आज़मगढ़ जनपद में अन्तर्राष्ट्रीय उत्प्रवास के कारण
राजेश कुमार राय, डॉ. वीरेन्द्र कुमार दूबे, चण्डेश्वर, आजमगढ़ ||122

29) नारी जीवन के बदलते सरोकारों का यथार्थ 'भया कबीर उदास'
डॉ. राठोड डायाभाई मीठाभाई, बगसरा ||127

30) छठी सदी ई. पूर्व के भारतीय गणराज्यों की शासन व्यवस्था
डॉ. सहदेव दास, हजारीबाग (झारखण्ड) ||132

31) प्राथमिक क्षेत्र के विकास में बैंकों के योगदान
श्रीमती अर्चना साने, जबलपुर मध्यप्रदेश ||137

32) हरदोई जिले की कृषि रूपान्तरण में आधुनिक तकनीकी की भूमिका
डॉ. वीरेन्द्र सिंह, कानपुर ||140

33) लोकोक्तियों में नारी उत्पीड़न
श्रीमती रेखा देवी शर्मा, जयपुर (राजस्थान) ||146

34) माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के सामाजिक—आर्थिक स्तर का....
ओम प्रकाश सिंह, डॉ. सरोज बाला, अलीगढ, (उ.प्र.) ||150

35) गुरुनानकजी यांच्या भजनातील सांगीतिक विशेषता
प्रा. नामदेव रामदास बोंपिलवार, नांदेड ||156

36) जयवंत दळवींच्या नाटकांचा वाड;मयीन मुल्यविचार
प्रा. डॉ. वर्षा गायकवाड, राजीव नगर नागपूर ||158

37) इयत्ता नववीच्या विज्ञान व तंत्रज्ञान विषयाच्या पाठ्यपुस्तकात दिलेल्या....
सौ. पाटील जयश्री प्रकाश, सातारा ||161

38) सहकार आणि राजकीय नेतृत्व : एक अभ्यास
तांबे रामेश्वर लक्ष्मण, प्रा. डॉ. नामानंद गौ. साठे, कळंब, जि. धाराशिव ||164

39) EDUCATIONAL PSYCHOLOGY : NATURE AND ASPECTS
Dr. Roopali, Dr. Ravindra Kumar Tyagi, Amroha (U.P.) ||167

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन

डॉ. [illegible] कुमार मिश्र
शोध निर्देशक
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षक–शिक्षा विभाग
[illegible] महाविद्यालय, जौनपुर (उ.प्र.)

[illegible] मिश्र
शोध छात्रा पी–एच.डी. (शिक्षा)

शोध सारांश :

प्रस्तुत शोध पत्र का शीर्षक "माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन" है। [illegible]

[illegible]

...मापनी का प्रयोग किया गया है।

...शोधपत्र का निष्कर्ष :

...ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र के विद्यार्थियों के पर्यावरण के प्रति जागरूकता में किसी स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के पर्यावरणीय जागरूकता में ...01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया।

महत्वपूर्ण शब्द : माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी, पर्यावरण के प्रति जागरूकता

प्रस्तावना :—

मनुष्य या किसी प्राणी का निर्माण पाँच तत्वों ... होता है—पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश, तथा वायु। मनुष्य का जीवन प्रकृति पर आधारित है, जल वायु उसके प्राण है। पर्यावरण में सामन्जय या सन्तुलन मानव जीवन के विकास के लिए आवश्यक है। पर्यावरण में सामन्जस्य बिगड़ने पर जीव जन्तुओं पर ... असर पड़ता है। इसलिए पर्यावरण को समझना ...संबन्धी शिक्षा जन—जन तक पहुँचना वर्तमान युग का सबसे महत्वपूर्ण कार्य है, क्योंकि यदि पर्यावरण दूषित हुआ तो धरती पर किसी जीव जन्तुओं या किसी वनस्थतियों की कल्पना नही की जा सकती है। इसके महत्व को हमारे मिट्टी, पत्थर, जल, गोबर, ..., गाय (जीव) सूर्य, चाँद, वायु, अग्नि आदि सभी को किसी न किसी देवता के रूप में पूजा जाता था। सन्तुलित पर्यावरण ही पृथ्वी पर जीवन का आधार है। असंतुलित पर्यावरण में जीवन का विकास सम्भव नहीं है। पार्यावरण विभिन्न जैव घटकों का संगठन है इस संगठन मे परिवर्तन होने पर पर्यावरण के साथ—साथ जीवों पर विभिन्न प्रकार के प्रभाव पड़ते हैं। ऐसे बहुत से परिवर्तन ... कारक है जो मनुष्य को प्रत्यक्ष रुप से प्रभावित करते है। अत: मनुष्य उन परिवर्तनों के प्रति प्रतिक्रिया करता है। जिससे पर्यावरण मनुष्य के मध्य क्रियात्मक सम्बन्ध स्थापित होता है। पर्यावरण में संतुलन बनाए रखना एव इसे सुरक्षित रखना हमारी मूलभूत आवश्यकता है।

वर्तमान में विश्व की जो मुख्य ज्वलन्त समस्या है, जिसके कारण सम्पूर्ण विश्व के प्राणियों का विनाश सम्भव है उसके प्रति समस्त मानव समुदाय को विशेष रूप से जागृत करना आवश्यक है, और वह उचित पर्यावरणीय शिक्षा के द्वारा ही सम्पव है। पर्यावरणीय शिक्षा बच्चों के लिए आवश्यक है जिससे उन्हे बढ़ते प्रदूषण से मानवीय विकास व भौतिक पर्यावरण के प्रभावित होने की जानकारी मिल सके उनमें पर्यावरण के प्रति सकारात्मक व वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हो सके तथा उनकी चेतना व अभिरूचि विकसित हो सके। युवाओं के लिए पर्यावरण शिक्षा आवश्यक है—जिससे उन्हें औद्योगीकरण से जन्मा उपभोक्तावाद एवं उसके परिणाम स्वरूप प्रकृति के अनवरत् दोहन से उत्पन्न समस्याओं के प्रति जागरूक करके समाज का उत्तरदायी सदस्य बनाया जा सके। उन्हें ज्ञान हो सके कि तकनीकी विकास के कारण व्यक्ति का जीवन प्रभावित होता है और आर्थिक पर्यावरण की कमी, बेरोजगारी व आय की असमानता से प्रभावित होता है। पर्यावरण समस्या परोक्ष व अपरोक्ष रूप से अशिक्षा से सम्बन्धित है। इससे छुटकारा पाने के लिए उचित पर्यावरणीय शिक्षा आवश्यक है। इस तरह के पर्यावरणीय ज्ञान से युवा वर्ग भविष्य में स्वयं अपने लिए स्वाबलम्बी योजना बना सकते है जिससे उनके और उनके संसाधनों के बीच सन्तुलन स्थापित हो सके।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :—

पर्यावरण ही जीवन है, प्रकृति से मनुष्य अलग नही हो सकता है। जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी, वृक्ष, जीव जन्तु सभी उससे सम्बन्धित है। यदि कहीं भी असन्तुलन हुआ तो उसका सीधा प्रभाव मनुष्य के ऊपर पड़ता है। अत: पर्यावरणीय शिक्षा की आवश्यकता तथा इसका महत्व आज सभी देशों के लिए समान रूप से है क्योंकि विश्व के सभी देश आज किसी न किसी प्रकार के पर्यावरणीय संकट से ग्रस्त है। विकासशील देश और विकसित देश अपनी भिन्न—भिन्न समस्याओं के बावजूद इस बात पर एकमत है कि जितनी तेजी से आज पर्यावरण की समस्यायें उठी है चाहे वह जनसंख्या वृद्धि के दुष्प्रभाव के कारण हो अथवा औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप हो या अन्य कारण हो। अनौपचारिक शिक्षा के अभिकरणों—साधनों में नाटक, कठपुतली, प्रदर्शन, श्रव्य सामग्री, दृश्य सामग्री, स्वैच्छिक संगठन, मनोरंजन क्लब, सामुदायिक संगठन आदि प्रमुख है—समाज सेवा के

माध्यम से सामाजिक कार्यों को बढ़ावा देकर पर्यावरण शिक्षा को व्यावहारिक बनाया जा सकता है पर्यावरण शैक्षिक कार्यक्रमों को विकसित करने के लिए विद्यालयों एवं स्वयं सेवी संगठनों में समन्वय की आवश्यकता है। अतः पर्यावरण की अनेक समस्याओं एवं संकटों के दृष्टिकोण को रखते हुए शोधकर्ता ने पर्यावरण शिक्षा से सम्बन्धित विषय को अपने शोध अध्ययन के लिए चुना, जिससे कि पर्यावरण की शिक्षा के द्वारा माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं में विकास सम्भव हो सके तथा पर्यावरणीय विश्व संकट में वह अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सके।

सम्बन्धित साहित्य :—

सिजिमोल और सुधा (२००९) ने माध्यमिक विद्यालय के छात्रा के बीच पर्यावरण जागरूकता पर एक अध्ययन किया। छात्रों के बीच पर्यावरण जागरूकता में सुधार के लिए स्कूलों में आयोजित कार्यक्रमों के बारे में जानकारी एकत्रा करने के लिए शिक्षकों के लिए साक्षात्कार कार्यक्रम का प्रयोग किया गया था। इस अध्ययन ने यह भी निष्कर्ष निकाला कि विद्यालय द्वारा संचालित पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम के माध्यम से माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की पर्यावरण जागरूकता में सुधार हुआ है।

अर्नेस्टो (२०१०) ने पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता, ज्ञान और दृष्टिकोण के स्तर के बारे में समूहों के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर पाया। माध्यमिक विद्यालय के पुरुष और महिला छात्रों के बीच पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरण शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण के बीच संबंध महत्वपूर्ण नहीं पाया गया; लेकिन ग्रमीण और शहरी छात्रों के मामले में पर्यावरण शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण महत्वपूर्ण पाया गया।

एन.पापा.राव (२०११)— ने स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन किया। उससे यह निष्कर्ष प्राप्त हुए कि कला तथा वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता अधिक पाई गई।

अमीनराड (२०१३) ने पाया कि लिंग के आधार पर छात्रों के समूहों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था, जबकि पर्यावरण जागरूकता परिणामों ने संकेत दिया कि शिक्षा के विभिन्न स्तरों में महत्वपूर्ण अंतर था। यह भी पाया गया कि मीडिया ने पर्यावरण जागरूकता के स्तर और छात्रों के दृष्टिकोण को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया।

डॉ. यादव राम सरदार एवं कुमार मुकेश (२०२२) : ने अयोध्या जिले में स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं का पर्यावरण के प्रति जागरूकता का एक अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि छात्र–छात्राओं के बीच पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर पाया गया। पर्यावरण जागरूकता के प्रति छात्राओं की तुलना में छात्र अधिक जागरूक थे। छात्र–छात्राओं के वातावरण के प्रति दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर पाया गया। छात्रों का पर्यावरण के प्रति दृष्टिकोण छात्राओं की तुलना में अपेक्षा अधिक अच्छा था।

श्रीमती तश्प्ती सैनी एवं गुड़िया मेघवाल (२०२२) :ने माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों का पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया। अध्ययन में निष्कर्ष में पाया गया है कि सरकारी विद्यालयों एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता का सरकारी विद्यालयों के छात्रों का निजी विद्यालयों के छात्रों से अधिक है। अतः निष्कर्ष निकलता है कि पर्यावरण शिक्षा परीक्षण के ज्ञान के उपयोग के प्रति निजी विद्यालयों के छात्र कम जागरूक है।

प्रस्तुत शोध कार्य के निम्नवत् उद्देश्य है—

१. ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र के विद्यार्थियों के पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

२. सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पना :—

प्रस्तुत शोध में शोध व शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है।

१. ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र के विद्यार्थियों के पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर होगा।

२. सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अन्तर होगा।

MAHMUL/03051/2012 ISSN: 2319 9318 | Vidyawarta® Peer-Reviewed International Journal | Jan. To March 2014 Issue-05, Vol-11 | 0128

न्यादर्श :

१. प्रस्तुत शोध अध्ययन जनपद–जौनपुर में सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र के विद्यार्थियों को अध्ययन हेतु लिया गया है।

२. शोध अध्ययन में माध्यमिक स्तर के कुल छात्र एवं छात्राओं को न्यादर्श के रूप में चयनित किये गये हैं।

शोध विधि : वर्तमान अध्ययन की शोध विधि सर्वेक्षण विधि का प्रयोग उसके उद्देश्यों व विशेषताओं को ध्यान में रखकर किया गया है। शोध समस्या का विषय "ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन" से सम्बन्धित है।

न्यादर्श :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श हेतु शोधकर्त्री ने उत्तर प्रदेश राज्य के जनपद–जौनपुर के अन्तर्गत सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र के ३०० विद्यार्थियों को ही न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :

प्रस्तुत अध्ययन हेतु शोधकर्त्री ने पर्यावरण के प्रति जागरूकता मापनी हेतु डॉ० प्रवीन कुमार झा द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ :

प्रस्तुत शोध अध्ययन शोधकर्त्री ने आंकड़े का [illegible] का सहसम्बन्ध गुणांक मान प्राप्त करके [illegible] ज्ञात किया है।

आंकड़ों का संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधकर्त्री ने विभिन्न सांख्यिकीय विधियों द्वारा [illegible] प्राप्त करने के लिए उनका विश्लेषण किया है। शोधकर्त्री ने आंकड़े की गणना हेतु सर्वेक्षण प्रपत्र [illegible] के आधार पर प्रत्येक चर का मध्यमान ज्ञात किया। इसके पश्चात् प्राप्त मध्यमान के आधार पर मानक विचलन निकाला, तत्पश्चात् छात्र एवं छात्राओं [illegible] के अध्ययन हेतु क्रान्तिक अनुपात मान का [illegible] किया। प्राप्त परिणामों का सारणीयन व उनकी व्याख्या इस प्रकार है–

परिकल्पना संख्या–०१ "ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र के विद्यार्थियों के पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर होगा" का सत्यापन।

तालिका सं.–०१

ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र के विद्यार्थियों के पर्यावरण के प्रति जागरूकता की सार्थकता का अध्ययन

क्र. सं.	वर्ग	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
०१	ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
०२	नगरीय क्षेत्र के विद्यार्थी	[illegible]	[illegible]	[illegible]			

तालिका सं.–०१ स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के पर्यावरण के प्रति जागरूकता के परीक्षण का मध्यमान २९.२४ एवं मानक विचलन ५.६२ एवं नगरीय क्षेत्र के विद्यार्थियों के पर्यावरण के प्रति जागरूकता के परीक्षण का मध्यमान २९.८८ एवं मानक विचलन ५.३५ पाया गया। ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र के विद्यार्थियों के पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर है अथवा नहीं, के लिए क्रान्तिक अनुपात मान ज्ञात किया जो ०.९८ प्राप्त हुआ, जो कि सार्थकता सारणी में देखने से ज्ञात होता है कि यह मान १.९६ एवं २.५८ से कम पाया गया। इस प्रकार कहा जा सकता है कि ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र के विद्यार्थियों के पर्यावरण के प्रति जागरूकता में किसी स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

अतः परिकल्पना संख्या–०१–" ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र के विद्यार्थियों के पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर होगा "–अस्वीकृत की जाती है।

आरेख सं.–०१

ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र के विद्यार्थियों के पर्यावरण के प्रति जागरूकता की सार्थकता के अध्ययन का आरेखीय प्रदर्शन

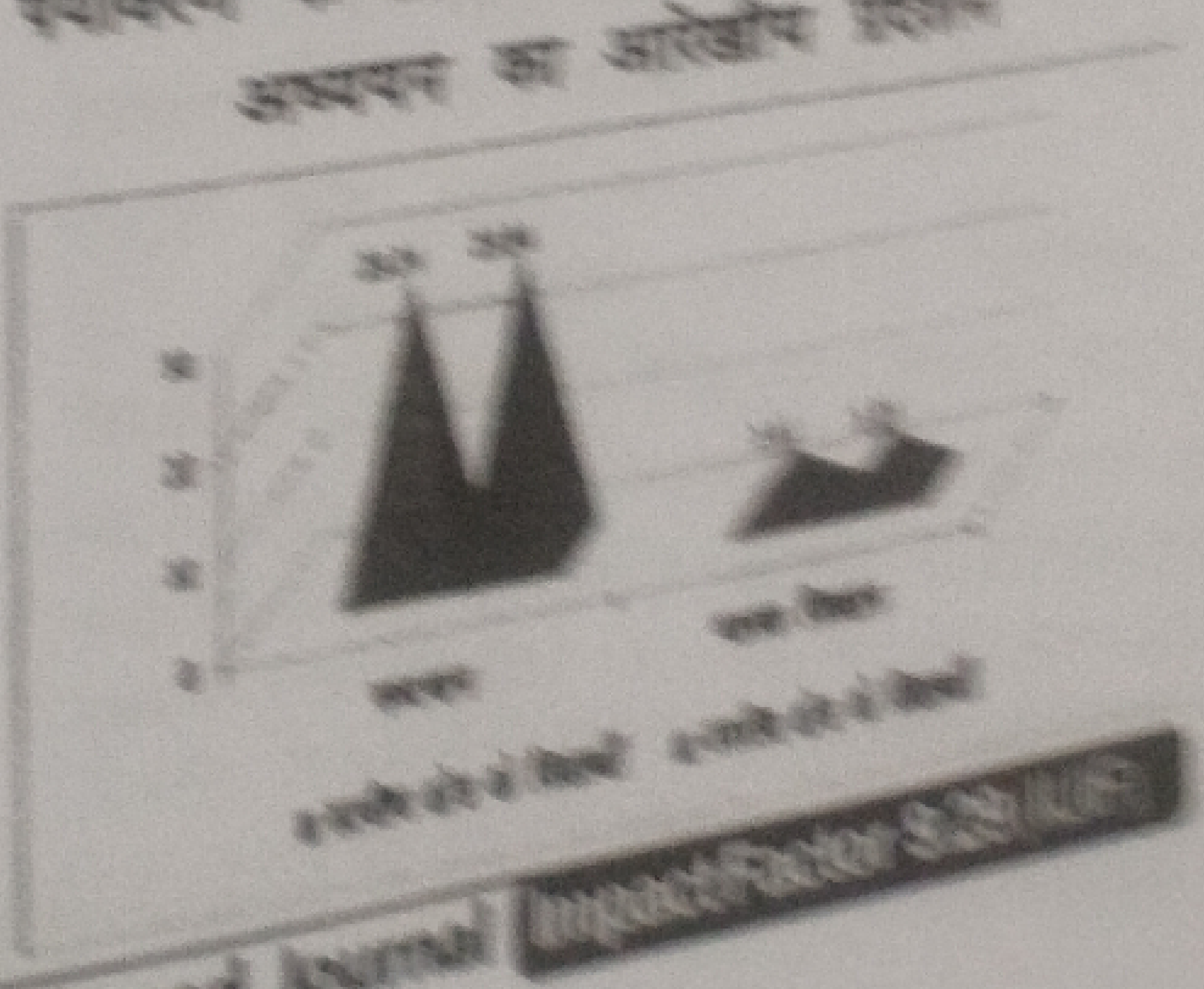

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318

Vidyawarta®
Peer-Reviewed International Journal

Jan. To March 2024
Issue-49, Vol-11

0122

com/search?q=cache:http:/ir.inflibnet.ac.in:8080/ jspui/bitstream /10603/72314/7/chapter% 25202.pdf &gws_ rd=cr& ei=qfH0Vp3CDMH_ugTig5SICQ

- डॉ० कुमार अशोक (२०१६) विज्ञान वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की पर्यावरणीय प्रदूषण के प्रति जागरूकता का अध्ययन IJCRT1134687 International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT) www.ijcrt.org 804 2017 IJCRT | Volume 5, Issue 3 September 2017 | ISSN: 2320-2882.
- श्रीमती तृप्ती सैनी एवं गुड़िया मेघवाल (२०२२) : माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों का पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT) www.ijcrt.org 2022 IJCRT | Volume 10, Issue 5 May 2022 | ISSN: 2320-2882.
- The influence of environmental education on environmental attitude of the post graduate students. Retrieved on 22.03.2016 from http:// webcache. Googleuser content. com/ searchq=cache:http://ir.inflibnet.ac.in:8080/ jspui/bitstream/10603/72314/7/chapter%25202 .pdf&gws_rd=cr&ei=qfH0Vp3CDMH_ugTig5SICQ.
- Ernesto, A. (2010). Environmental education course development for pre service secondary school science teacher in the republic of Korea, The Journal of Environmental Education, 31(4). 11-18.
- Aminard, S. (2013). Knowledge of environmental issue where pupil acquire information and how it affects their attitude, opinion and laboratory behavior.Journal of Psychology Abstract and reviewvol.4 (1). January–June 1997.
- DR .Ram Sardar Yadav & Kumar Mukesh (2022) : Academic Social Research Issn No.:2456-2645. VOL 8NO 1(2022):JANUARY TO MARCH 2022.ESEARCH

□□□

आज़मगढ़ जनपद में अन्तर्राष्ट्रीय उत्प्रवास के कारण

राजेश कुमार राय
शोध छात्र, भूगोल विभाग,
श्री दुर्गा जी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चण्डेश्वर, आजमगढ़

डॉ. वीरेन्द्र कुमार दूबे
शोध निर्देशक, भूगोल विभाग,
श्री दुर्गा जी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चण्डेश्वर, आजमगढ़

****

सारांश –

विश्व प्रवासन रिपोर्ट (World Migration Report-2005) के अनुसार वर्ष २००४ में वैश्विक जनसंख्या का लगभग २.९ प्रतिशत लोग अन्य विदेशों में उत्प्रवासित हुए। वहीं विश्व प्रवासन रिपोर्ट (World Migration Report-2020) के ऑकड़ों के अनुसार वर्ष २०१९ में विश्व जनसंख्या का ३.५ प्रतिशत लोग अपने मूल देश से अन्य देशों की ओर उत्प्रवासित हुए है। विश्व प्रवासन रिपोर्ट (World Migration Report-2022) के अनुसार वैश्विक जनसंख्या का ३.६ प्रतिशत लोग विदेशों में उत्प्रवासित हुए है। संचार तकनीकी और आवागमन में हुए क्रान्तिकारी परिवर्तन के परिणाम स्वरूप वर्तमान शताब्दी को निःसंदेह उत्प्रवासन युग माना जा सकता है। आज के दौर में वैश्विक पटल पर देखा जाय तो पूरी दुनिया के देश अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अपनी जनसंख्या का कुछ प्रतिशत अन्तर्राष्ट्रीय उत्प्रवासन में संयोजित कर रहें है। भारत जैसे विकासशील देशों में लगभग ४ दशकों से अन्तर्राष्ट्रीय उत्प्रवासन ने रफ्तार पकड़ी है। एक तरफ जहां खाड़ी देशों के लिए उत्प्रवासन का दौर १९७० के दशक में आये हुए आयल बूम के बाद बहुत तेजी के साथ हुआ वहीं पश्चिमी देशों में उत्प्रवासन शैक्षिक कारणों और बेहतर जीवनशैली अपनाने के उद्देश्य के कारण हुआ।